iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 12 **Issue:** XII **Month of publication:** December 2024

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.66088

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue XII Dec 2024- Available at www.ijraset.com

लैंगिक समानता : एक ज्वलन्त प्रश्न

डा पूजा तिवारी
सह प्राध्यापक एवम विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग , शासकीय महाविद्यालय बिछुआ जिला छिन्दवाडा [म.प्र.]

लैंगिक समानता ,एक मौलिक मानव अधिकार होने के अलावा ,शांतिपूर्ण समाजों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है ,जिससे पूर्ण मानव क्षमता और सतत विकास हो | लैंगिक समानता अर्थात एक ऐसा विश्व जहाँ कोई भी व्यक्ति अपनी लैंगिक पहचान के कारण डर में न रहे या हिंसा का सामना न करना पड़े |लैंगिक समानता में समान अधिकार ,समान अवसर ,सम्मान तथा बिना किसी डर के अपनी पहचान ज़ाहिर करने की छूट आदि शामिल हैं |

लैंगिक समानता पर श्री चतरसिंह मेहता द्वारा प्रकाशित लेख " मानव विकास और महिलाएं ''में लिखा है की विश्व में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है पर उन्हें पुरुषों के समान अवसर प्राप्त नही हैं ,यह कटु सत्य है की महिलों को पुरुषों से अधिक काम करना पड़ता है किन्तु उनके कार्यों की कोई कीमत ही नही आंकी जाती है |

I. समानता की खोज

महिला द्वारा पुरूष के साथ समानता की खोज एक सार्वभौमिक तथ्य बन चुका है ,महिलाएं वर्तमान में इस कठोर पुरूष प्रधान समाज में समानता प्राप्त करना चाहती है |

A. महिला – पुरूष सम्बन्ध

पुरुषों से अलग महिलाओं की पहचान की अभिव्यक्ति वैचारिक दृष्टी से तो हो सकती है किन्तु व्यवाहरिक दृष्टी से नही |
सामान्य रूप से एक महिला की पहचान स्वयं और अन्य लोगो के द्वारा एक पुरूष के साथ एक पुत्री ,एक पत्नी ,एक माँ के रूप में ही की जाती है |

B. व्यक्ति के रूप में महिलाओं की पहचान

परिवार में महिला की पहचान उसकी बुमिका से परिभाषित की जाति है ,महिलाओं की पहचान के कई पक्ष हैं जो उसके परिवार की जातीय एवम वर्गीय पृष्ठ भूमि पर निर्भर हैं |जब कभी महिला ने स्वयं को एक "व्यक्ति ''के रूप में पहचान प्रकट करना चाहा तो उसको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है |

C. महिलाओं को सर्वत्र असमान अवसर

समाज में महिलाओं को पुरुषो के बराबर अवसर प्राप्त नही हैं ,लगभग सभी समाजों में पुरूष जीवन के हर पहलु में अपना निर्णय सर्वोपरी रखता हैं दुर्भाग्य यह है की दुनिया के सभी देशों में लैंगिक समानता पर कोई विशेष सुधार कार्य नही हो पा रहा हैं , विश्व के 130 देशों में स्वीडन ,फ़िनलैंड ,नार्वे एवम डेनमार्क लिंग समानता और महिला अधिकारों में सबसे ऊँचे दर्जे पर हैं | विश्व लैंगिक अंतर सूचकांक 2024 में भारत 146 देशों में 129 वें स्थान पर हैं जबकि 2022 में भारत 193 देशों में 108 वें स्थान और 2023 में भारत 146 देशों में 127 वें स्थान पर था ,महिलाओं की दृष्टी से विकास सूचकांक के जो मानक हैं ,उसमे भारत की स्थिति अत्यंत शोचनीय है | राष्ट्रीय आय का समानता से नगण्य सबंध – आय लैंगिक समानता के लिए महत्वपूर्ण घटक नही है ,विश्व के कई गरीब देशों ने महिला साक्षरता डर में वृधि करने में सफलता पाई है |

D. प्रयत्न अधिक ,सफलता कम

यधपि हर देश ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए अपने अपने तरीके से प्रयास किये है ,और कर रहें हैं
किन्तु अभी भी असामनता विधमान दिखाई देती हैं |

E. महिलाओं की आय की गिनती ही नही

महिलाओं के आय बहुत ही कम आंकी जाती है ,महिलाये हमेशा से घरेलू कार्य ज्यादा करती हैं ,बच्चों का पालन -पोषण ,कुकिंग करना ,कपडे धोना ,झाड़ू -पोंछा करना अन्य कार्य करना जिसका मूल्य ही नही आँका जाता है ,यदि महिलाओं के कार्यों की आय की गिनती सही तरीके से की जाये तो यह पुरुषों के बराबर या अधिक ही होगी |

F. क़ानूनी भेदभाव एवम अत्याचार

महिलाओं के प्रति हिंसा एवम अत्याचार आदि असामनता का मुख्य कारण है ,महिलाओं को मानसिक एवम शारीरिक हिंसा का सामना जन्म से लेकर मृत्यु तक करना पड़ता है ,कन्या भूर्ण हत्या ,योन हिंसा ,रेप ,वैश्यावृति ,हत्या ,आत्महत्या ,तलाक ,शारिरिक शोषण आदि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की फेहरिस्त बहुत लम्बी है|एशिया में लगभग 10 लाख बालिकाओं को वेश्यावृति में धकेल दिया जाता है |

II. मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु प्रस्ताव

1) क़ानूनी समानता के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अगले दस सालों तक पूरे प्रयास किये जाएँ |
2) महिलाओं की आर्थिक एवम संस्थागत सहायता में बढ़ोतरी की जाये |
3) सार्वजानिक शिक्षा ,स्वास्थ्य ,प्रजनन ,महिलाओं हेतु ऋण सुविधा आदि में वृधि की जाये ताकि महिला समानता बढ़ सके |
4) विकासशील देशों को मानव विकास कार्यक्रम के लिए अपने बजट की 20 प्रतिशत राशि मानव संसाधन विकास जैसे स्वास्थ्य ,शिक्षा ,जल ,पोषण आहार ,परिवार कल्याण कार्यक्रमों के लिए चिन्हित कर देना चाहिए |
5) गरीब लोगो के लिए स्व रोज़गार और ऋण सुविधा मिलना चाहिए |

भारत में उदारीकरण की नीति के बाद सामाजिक क्षेत्रों में व्यय की राशि में आशातीत बढ़ोतरी हुई है |

नयी विश्व – व्यवस्था में महिला पुरुषों के समान अवसरों में उन्नति हो सकती है क्योकि जब तक विश्व में महिलों की आबादी इस त्रासदी से मुक्त हो कर पुरुषों के समान अवसर युक्त जीवनयापन नही कर सकेगी विश्व विकास का सपना नितांत अधूरा ही रहेगा ,अपनी योग्यता एवम क्षमता के अनुसार हर क्षेत्र में महिलाओं को जब समान अवसर उपलब्ध होंगे तभी सही एवम श्रेष्ठ विकास होगा | इस सन्दर्भ मर कई समाज सुधार आंदोलन एवम समाज सुधारक दृष्टिगत होते हैं जैसे रजा राम मोहन राय ने 1828 में ब्रम्ह समाज की स्थापना की थी | ईश्वरचन्द्र विद्या सागर ,महादेव गोविन्द रानाडे ,स्वामी विवेकानंद ,स्वामी दयानंद सरस्वती ,सर सैय्यद अहमद खान ,बदरुदीन तय्यब जी .सय्यद इमाम ,एनिबीसेंट आदि ने महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने ,कुरूतियों को मिटाने एवम महिलाओं के विकास एवम प्रगति हेतु अथक प्रयास किये हैं |

इस प्रकार से सम्पूर्ण विश्व में लैंगिक समानता को पाना सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है यधपि वर्तमान में विश्व में तथा खास तौर पर भारत देश में पिछले कई वर्षो में महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने हेतु काफी प्रयास हुए हैं ,किन्तु अभी भी महिलाओं को समानता देने के लिए बहुत कुछह करना शेष है इसलिए विश्व में सतत विकास के लक्ष्यों में लैंगिक समानता को प्रथम पांच महत्वपूर्ण लक्ष्यों में स्थान दिया गया है क्योकि लैंगिक समानता सामाजिक ,आर्थिक उन्नति हेतु नितांत आवश्यक एवम अनिवार्य है और कोई भी समाज महिलाओं के सामजिक योगदान को नज़रंदाज़ करके कभी भी प्रगति नही कर सकता हैं क्योकि लैंगिक समानता ही एक मजबूत समाज की नींव हैं |

संदर्भ

[1] लवानिया ,डा.एम.एम.-भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र ,रिसर्च पब्लिकेशन्स ,जयपुर
[2] सिंह ,डा. सिंह निशांत – मानवाधिकार एवम महिलाएं ,राधा पब्लिकेशन्स ,दिल्ली
[3] बघेल ,डा . डी.एस.- समाजशास्त्रीय निबंध ,कैलाश पुस्तक सदन ,भोपाल
[4] शर्मा राम ,मिश्रा एम. के . -महिला और मानवाधिकार ,अर्जुन पब्लिशिंग हॉउस ,न्यू दिल्ली
[5] खत्री ,हरीश कुमार - मानवाधिकार ,कैलाश पुस्तक सदन भोपाल

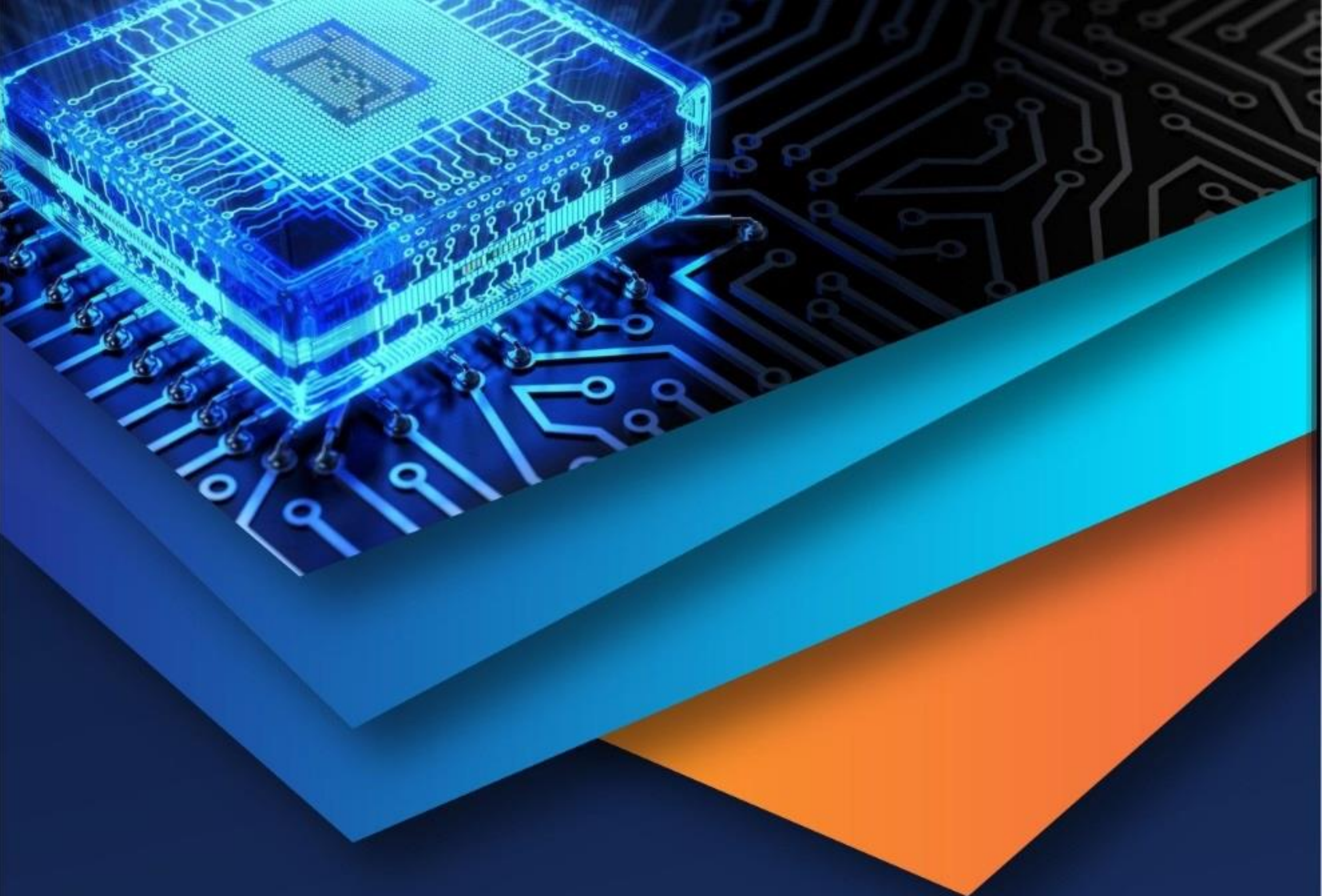

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)